श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ द्वितीय वर्ष-अभ्यास ९

ऐनरोलमेन्ट नंबर [redacted] शहर [redacted]

विद्यार्थी का नाम [redacted]

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१) आदेयनामकर्म
(२) समता
(३) परलोक की
(४) पुंडरिक ह्रदमें से
(५) टी.व्ही
(६) प्रथम
(७) उच्च गोत्र
(८) स्वाध्याय
(९) मध्य
(१०) गमनागमन की
(११) लब्धिपर्याप्ता
(१२) रम्यकक्षेत्र
(१३) वक्र
(१४) एकासणे का
(१५) शुद्ध पौषध धर्म
(१६) ज्ञानसागर
(१७) तीर्थंकर नाम कर्म
(१८) दीक्षा एवं सामायिक
(१९) कर्मरूप
(२०) सौधर्म

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१) स्वाध्याय
(२) अंतराय कर्म
(३) महाविदेह
(४) रुपानुपात
(५) विज्ञानघनएवैतेभ्यो
(६) नंदिषेण कवी
(७) छः
(८) नीलवंत
(९) अनुग्रह
(१०) निर्माण नामकर्म
(११) मुर्गी की तरह
(१२) अध्यापक
(१३) धर्मोपदेश
(१४) अनवस्थित
(१५) हरिभद्रसूरि

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१) किये हुऐ
(२) कुंभार
(३) निर्माण करनेवाले
(४) गिरती है

(५) समृद्धि को
(६) विशाल
(७) जाति है
(८) त्रीन्द्रिय
(९) यश और किर्ति
(१०) अविधि
(११) लवण समुद्र
(१२) प्रकाश
(१३) मे
(१४) महान
(१५) सीतामें
(१६) पर्याप्त
(१७) गुल-बड़ा
(१८) अस्थि दांत
(१९) विपरीत
(२०) स्वस्तिक

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	5	(६)	9
(२)	8	(७)	९
(३)	६ ✗	(८)	90
(४)	9	(९)	2
(५)	3	(१०)	४

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१) 2000
(२) 10
(३) ४
(४) १४०००
(५) 92
(६) १६
(७) १६
(८) १०
(९) ५
(१०) 3,36000

प्रश्न-६ ✓ या ×

प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

(१)	✗ ✗	(१)	29
(२)	✓	(२)	90
(३)	✗	(३)	५
(४)	✓	(४)	93
(५)	✗	(५)	92
(६)	✓	(६)	२४
(७)	✓	(७)	20
(८)	✗	(८)	१७
(९)	✗	(९)	८
(१०)	✓	(१०)	४

प्रश्न-१	प्रश्न-२	प्रश्न-३	प्रश्न-४	प्रश्न-५	प्रश्न-६	प्रश्न-७	प्रश्न-८	कुल गुण
20	15	9	7	8	8	10	15	92
मिले हुए गुण	मिले हुए गुण	मिले हुए गुण	मिले हुए गुण	मिले हुए गुण	मिले हुए गुण	मिले हुए गुण	मिले हुए गुण	

रीमार्क _____ जांचनेवाले की सही _____

प्रश्न - ८

१. श्रावक के जीवन में स्वाध्याय का बहोत ही महत्व है। हमारी दिनचर्या में स्वाध्याय की प्रवृत्ति होनी ही चाहिए। जिसको उपवास आदि तप नही हो सकता उस साधक को स्वाध्याय द्वारा अपनी आलोचना उतरनी चाहिए। श्रावक और साधु शाम के प्रतिक्रमण के बाद स्वाध्याय करना चाहिए। स्वाध्याय करनेसे पाठ किये हुये सुत्रोंका परावर्तन याने रिद्धिजन होती है। नया पाठांतर होता है। स्वाध्याय से स्वाध्याय करनेवाला और स्वाध्याय श्रवण करनेवाला दोनों का कल्याण ही होता है। स्वाध्याय यह अभ्यंतर तपका एक प्रकार है। स्वाध्याय के बहोत ही लाभ होते है, इसलिए स्वाध्याय हमारे जीवन का अंग होना चाहिए।

२. आत्मा में दान आदि पाँच लब्धियाँ याने शक्तियाँ है, उन्हे अटकाने का, रोकने का काम अंतराय कर्म करता है। ये पाँच प्रकार का है। जिस कर्म के उदय से शक्ति होते हुये भी, दान का महिमा जानते हुये भी दान देने का उत्साह न हो वह दानांतराय कर्म। जिस कर्म के उदय से पात्रता, योग्यता हुये होते भी वस्तु की प्राप्ति न हो वह लाभान्तराय कर्म। जिस कर्म के उदय से सर्व भोग सामग्री उपलब्ध होते हुये भी जीव न भोग सके वह भोगान्तराय कर्म होता है। जिस कर्म के उदय से सर्व उपभोग की सामग्री उपलब्ध होते हुये भी जीव उसका उपभोग न कर सके वह उपभोगांतराय कर्म होता है। जिस कर्म के उदय से जवान, नीरोगी होते हुये भी अपने शक्ति का उपयोग न कर सके वह वीर्यान्तराय कर्म है।

३. सामायिक यह अडतालीस मिनिट का साधुपना है। सामायिक में समता की आय होती है। जैसे-जैसे हम सामायिक करते जाते है वैसे वैसे समता की वृद्धि होनी चाहिए, इसलिए सामायिक की आराधना में आगे बढ़ना चाहिए। सामायिक की सच्ची सफलता समता से ही है। इसलिए प्रमाद को छोडकर अच्छी तरह से सामायिक की साधना में लग जाना चाहिए। हमारा सामायिक शुद्ध बने इसके लिये भी सावधान बनना चाहिए। सामायिक शुद्ध करने के लिये इसके अतिचार एवं दोषों को जानना चाहिए। इन दोषों को दूर करने का पुरुषार्थ करना चाहिए, जिससे सामायिक की साधना शुद्ध हो जाये।

४. भगवान महावीर के दसवे गणधर मैतार्य ये जिनकी माता वरुणादेवी और पिता दत्तविप्र थे। वो ब्राह्मणकुल के विद्वान अध्यापक थे। सोमिलविप्र के आमंत्रण से आपापापुरी में गये उनको "विज्ञानघन" इस वेदपद का गलत अर्थ करके उनको आत्मा के पुनर्जन्म के बारे में शंका थी। भगवान ने इन पदो का विस्तार करके मीठे वचन में उनको बताया कि, "वेदपदो में बताया है कि जो ब्राह्मण शुद्र के अन्न को खाते है वो नारकी होता है तथा वो इस यज्ञरुपी आयुधवाला यजमान शीघ्रता से स्वर्गलोक में जाता है इसलिये इन वेदपदो का विचार करके परलोक के अस्तित्व को स्वीकार कर।" ये सुनकर उनका संशय दूर होनेसे प्रतिबोध पाकर, उन्होने दीक्षा लेकर प्रभु के शिष्य हुये।

५. हिमवंत, हिरण्यवंत, हरिवर्ष और रम्यक क्षेत्रों का अभ्यंतर क्षेत्र में समावेश होता है जो मध्य और बाह्यक्षेत्र के बीच में है। भरत और महाविदेह क्षेत्र के बीच में एवं ऐरवत और महाविदेह के बीच यह अभ्यंतर क्षेत्र है। इस क्षेत्र में बहती नदियाँ अभ्यंतर नदियाँ कहलाती है। हिमवंत क्षेत्र में रोहिता और रोहितांशा २८००० छोटी नदियों के साथ अनुक्रमसे पूर्व की ओरसे पश्चिम की ओरसे लवण समुद्र को मिलती है। हिरण्यवंत क्षेत्र में सुवर्णकला और रुप्यकला २८००० छोटी नदियों के साथ अनुक्रमसे पूर्व की ओरसे और पश्चिम की ओरसे लवण समुद्र को मिलती है। रम्यकक्षेत्र में नरकान्ता और नारीकान्ता ये दो नदियाँ ५६००० छोटी नदियों के साथ पूर्वतरफसे और पश्चिम की ओरसे अनुक्रमसे लवण समुद्र को मिलती है।